ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

कवि भूषण की राष्ट्रीय भावना

डॉ सुमन कुमारी

एसोप्रोफेसर, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, टनकपुर, चम्पावत।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृति श्रृंगार रचना को छोडकर वीर रस की रचना करने वाले भूशण की सम्पूर्ण काव्य राश्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण है। उनकी इस राश्ट्रीय भावना में राश्ट्र का सम्पूर्ण जन जीवन समाहित है और विद्यमान है जनता के हृदय का ओयमयी स्वर। वस्तुत: वह राश्ट्रके अमर गायक थे उन्होने जनता के हृदय में देश प्रेम को जागृत करने वाली कविता लिखों। उन्होंने अपने आश्रयदाताओं की न मिथ्या प्रशंसा की और न अपनी कविता को मनोरंजन का साधान बनाया।

भूशण की राश्ट्रीय विशेताएँ इस प्रकार है –

1. देश प्रेम – देश प्रेम भूशण की कविता का मुख्य स्वर है। वे देश को ऐसे शासन से मुक्त कराना चाहते थे जो कि आततायी, अत्याचारी और धार्मान्धाता से परिपूर्ण था। दिल्ली का केन्द्रीय शासन जर्जर हो रहा था इसलिए उसके विरू) उन्होने महाराज शिवाजी के शौर्य और पराक्रम को उसके अनुकुल पाया। तत्कालीन दिल्ली के शासन को स्पश्ट चेतावनी उनके काव्य में है –

बुढति है दिल्ली सो, सम्हारे क्यो न दिल्लीपति,
धाक्का आनि लाग्यो सिवराज महाकाल के।

औरंगजेब की दमन नीति, धार्म विरोधाी भावना भारतीय संस्कृति और कला के आगार मन्दिरों को गिराने की स्पश्ट आलोचना की तथा उसके खिलाफ ललकार दी तथा उसके विरू) आदर्श महाराज शिवाजी को खडा किया –

डाढ़ी के रखैयन की डाढी सी रहति छाती
बाढ़ी मरजाद जसहद हिन्दुवाने की।
कढ़ि गई रैयत के मनकी कसक सब
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की।

2. धार्म और संस्कृति के प्रति प्रेम –

भूशण भारतीय संस्कृति के प्रेमी थे। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा के प्रति उन्हें अगाधा श्र)ा थी वे महत्व को जानते थे। भारतीय संस्कृति ने हिंसा, भोग, अन्याय और धार्मान्धाता को कभी स्वीकार नहीं किया इसीलिए कविवर भूशण भारत एवं भारतीय संस्कृति के अमर रक्षक पौराणिक महापुरूशों के रूप को शिवाजी जैसे वीर में देख रहे है –

वरिधिा के कुभभव, घन वन दावामल,
तरून तिमिरि हू के किरन समाज हो।
कस के कन्हैया, मामधोनु हू के कंट कल
कैटव के कालिक विहंग के वाज हो।

इसी प्रकार शिवाजी को वह हिन्दू धार्म का एक रक्षक मानते है। उनका मानना है कि उन्होने हिन्दुओं की रोटी और चोटी की रक्षा की है –

हिन्दुन की चोटी, रोटी राखी है सिपाहिन की
कॉधों में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।।

3. भाशा और साहित्य प्रेम –

भूशण को राश्ट्र भाशा और भारतीय साहित्य से भी अनन्य प्रेम था। भूशण के समय में और महाराज शिवाजी के शासन में मराठी का बोलबाला था। उन्होने अपने काव्य मराठी को न अपनाकर ब्रज और खडभ् बोली को अपनाया।

4. समाज प्रेम –

साहित्य समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार उसका जागरूक दृश्टा। सच्चा कवि समाज की ओर से ऑखे बन्द नहीं रख सकता है। वह समाज की दुर्दशा, अनीति और अत्याचार को देखकर बैचेन हो उठता है और अपने काव्य में इसके खिलाफ आवाज बुलन्द करता है। भूशण के समय में देश की यही दशा हो रही थी। प्रत्येक व्यक्ति मुस्लिम शासकों की अनीति से भयभीत था। अत: कविवर भूशण ने समाज को नैतिक जागरण प्रदान करने के लिए उसकी दुर्दशा का निम्न शब्दों में चित्रण किया है –

बैठती दुकानें लेके रजवारन की,
तहॉ आई बादशाह राह देखै सबकी।
बेटिन को यार और यार है लुगाइन को,
राइन के मार दाबादार गये दब की।।

5. स्वराजनीतिक मान्यताएँ –

राश्ट्र कवि अपने देश की राजनीति एवं उसकी मान्यताओं को उचित मानता है। भूशण भारतीय राजनीति के पक्षधार थे इसलिए उसने ऐसे ही राजाओं को अपने काव्य का नायक बनाया है जो भारतीय नीतियों के अनुदायी थे। उन्होंने महाराज शिवाजी की नीति में वे सब नीतियॉ देखी थी जिनको अपनाकर विदेशी उन्नति कर रहे थे –

जेर रूसियान को है तेग खुरासान हू को,
निति इंग्लैण्ड चीन हुन्नर महादरी।
हिम्मत अमान मरदान हिन्दवान हू की,
रूप अभिमान हवसान हदकादरी।।

इस प्रकार हम देखते है कि भूशण का सम्पूर्ण काव्य राश्ट्रप्रेम की अनन्य भावना ओजपूर्ण उत्साह और जागरण के सन्देशा से भरा हुआ है।

कुछ आलोचक हिन्दु जाति और हिन्दू वीरों की प्रशंसा तथा मुस्लिम ाासकों के विरोधा के कारण भूशण के काव्य पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाते है। वस्तुत: भूशण का मुस्लिम धार्म से कोई विरोधा नहीं था वरन उनकी कट्टर धार्मान्धाता से विरोधा था, तलवार के बल पर धार्म प्रचार का विरोधा था। उनका सम्पूर्ण काव्य नवजागरण, ओजमयी उदात्त भावनाओं परिपूर्ण है।

सहायक ग्रन्थ – सूची

1. शिवा शौर्य – भूशण
2. कवि भूशण – वेदकुमार वेदालंकार
3. भूशण की रचनाएँ – भूशण
4. रस सिंद्वान्त – डॉ नगेन्द्र